Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 11 (November 2024) pp: 241-244
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अयोध्या में रिलीफ भित्तिचित्रों का कला–ऐतिहासिक अध्ययन
"An Art-Historical Study of Relief Murals in Ayodhya"

* सरिता सिंह
**डॉ. अर्चना त्यागी
** शोधार्थिनी, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड*
*** शोध मार्गदर्शिका एसोसिएट प्रोफेसर ललित कला विभाग महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय*

अमूर्त

भारत के अधिकांश क्षेत्रों में महान संरचनाएँ मजबूत पत्थरों और लोहे के ढाँचे से से जोड़कर निर्मित की गई हैं। परन्तु भारत में इस्लामिक शासन अथवा सल्तनत के आगमन के फलस्वरुप उत्तर भारतीय वास्तुकला में व्यापक रूप से बदलाव आया अब संरचनाएँ इन पत्थरों की अपेक्षा ईंटों और गारों से जोड़कर बनाई जाने लगीं। नवाबों के संरक्षण में अवध में विकसित वास्तुकला परम्पराओं में सबसे अधिक मात्रा में नीचे और गारों का प्रयोग किया गया तथा उनकी बाह्य दीवारों को चूने तथा गारे के प्लास्टर से सजाया गया। इसके अलावा इन वास्तुकला परंपराओं की सजावट का प्रभाव व्यापक रूप से अयोध्या की वास्तुकला तथा उनकी सजावट पर भी पड़ा। सरयू नदी के तट पर बसा होने के कारण अनेक मंदिरों को मिट्टी की पक्की ईंटों और गारे के प्लास्टर से जोड़कर बनाया गया जिन पर नवाब कालीन रिलीफ अलंकरणों का हिंदुत्वकरण किया गया। भगवान राम की जन्मस्थली और वैष्णव भक्ति परम्परा के प्रतिष्ठित केंद्र के रूप में अयोध्या अपनी धार्मिक धरोहरों, पवित्र वास्तुकला और समृद्ध दृश्य परम्पराओं जैसे रिलीफ भित्ति चित्रों, उभरे मूर्तिकला तत्वों के साथ एकीकृत हैं।

यह शोध पत्र अयोध्या की प्रमुख वास्तुकला में चित्रित तथा उत्कीर्ण किए गए रिलीफ भित्ति चित्रों का कला ऐतिहासिक विश्लेषण करता है। इसके अलावा या इस बात की पड़ताल करता है कि हिंदू मंदिर वास्तुकला में निर्मित ये रिलीफ भित्ति चित्र किस तरह से नवाबी मुहावरों और अलंकरणों से उधार लिए गए हैं।

शोध प्रश्न

1. अयोध्या के रिलीफ भित्ति चित्रों ने अन्य परम्पराओं से किस तरीके से अपना विकास खोजा?
2. अयोध्या के रिलीफ भित्ति चित्र अन्य समकालीन रिलीफ भित्ति चित्रों से किस तरह से प्रभावित हैं?

प्रतीक–विद्या और विषय–वस्तु ऐतिहासिक/क्षेत्रीय प्रभाव

ऐतिहासिक रूप से अगर देखा जाए तो अयोध्या में निर्मित किए गए रिलीफ भित्ति चित्र अवध की नवाबी वास्तुकला के परिभाषित टुकड़े में सबसे पहले इन बड़ी–बड़ी मछलियों के प्रति के आधार पर निर्मित किए गए। जो अवध के नवाबों की शाही निशानी के रूप में बनाए गए थे। मछलियों के युग्म की यह शाही निशान अयोध्या कि हिंदू वास्तुकला में भी स्पष्ट रूप से चित्रित की गई हैं। मछलियों के इस राजकीय चिन्ह में बाद में गंगा जमुनी तहजीब के अंतर्गत इनमें हिंदुत्व वादी विषयों का समावेश हुआ जिसमें भगवान राम की अयोध्या धनुष बाण को प्रत्यंचा पर चढ़ा हुआ इन मछलियों के साथ प्रदर्शित किया गया। ये मछलियां राजकीय वैभव समृद्धि और मंगलय को प्रदर्शित करती हैं।

चित्र संख्या एक और दो नवाब कालीन बहू बेगम के मकबरे में निर्मित मछलियों के रिलीफ अलंकरण तथा जगदीशपुर मंदिर में निर्मित रिलीफ अलंकरण व मानवाकृतियाँ

राज सदन के सामने निर्मित इस मंदिर की रिलीफ भित्ति चित्रों पर स्पष्ट रूप से बनारस की अमेठी मंदिर का प्रभाव देखा जा सकता है। उड़ती हुई इन अप्सराओं का रिलीफ दृश्यांकन स्पष्ट रूप से बनारस के अमेठी मंदिर से उधार लिया गया है, दोनों एक दूसरे से शैलीगत समानताएं साझा करते हैं, जो अयोध्या के सांस्कृतिक आदान–प्रदान को उजागर करता है।

अयोध्या में मंदिरों की दीवारों पर दर्शाए गए रिलीफ भित्ति दृश्यांकन बाह्य दीवारों के अलावा मुख्य गर्भगृह की केंद्रीयता और प्रदक्षिणापथ के संकेंद्रित, व्यवस्थित गलियारों में भी बनाए गए हैं, जो इस्लामी कब्रों के डिजाइन सिद्धांत से मिलते–जुलते हैं। इसके अलावा मंदिरों के खिड़कियों और कोनों के दरवाजों के ऊपर मुगल बाल्स्टर स्तंभों का रूप लेने वाले प्लास्टरों का एक नुकीला मेहराब सहारा देते हुए उभारदार तरीके से स्थापित किया जाता था । अयोध्या के मंदिरों के ये रिलीफ चित्रांकन अवधि और अपने भूगोल में करीबी स्रोतों से आकर्षित दिखाई पड़ते हैं। चूंकि अयोध्या का सम्पूर्ण हिस्सा नवाबों के अधीन था जिनके संरक्षण में यहां के कारीगरों ने इस्लामी तथा हिंदू तत्वाधान को स्पष्ट रूप से इन वास्तुकला पर जड़ दिया। अयोध्या के अधिकांश मंदिरों पर केंद्रीय बिंदु पर खिले हुए फूलों के साथ नुकीला मेहराब बनाया गया है जो 17वीं शताब्दी के दौरान मुगल वास्तुकला में सबसे पहले बनाया गया था। लोब के चारों ओर घुमावदार लताओं और पत्तियों का जोड़ भी नवाबी और मुगल वास्तुकला से उधार लिया गया है।

चित्र संख्या तीन और चार गुप्तार घाट स्थित शिव मंदिर अथवा शिवालय में मुगल कालीन नुकीले मेहराब युक्त रिलीफ अलंकरण तथा तिवारी मंदिर के प्रवेश द्वार पर सजावटी रिलीफ अलंकरण जो नवाबी और मुगल प्रभाव के साथ–साथ अयोध्या की स्थानीय लोक परंपराओं को प्रदर्शित करता है।

तदनुसार अयोध्या के मंदिरों की वास्तुकला में चित्रित यह रिलीफ अलंकरण अतीत और वर्तमान के अलावा क्षेत्रीय और अंतरक्षेत्रीय रूपों को प्रकट करते हैं। इन मंदिरों में उभार पैनलों में दर्शाई गई राहते जो नक्काशीदार वनस्पति रूपांकनों और प्लास्टिसिटी मेहराबों के रूप में बाहर की ओर निकलने वाली ये आकृतियां लंबे समय तक देवताओं की सेवा और मंदिरों की शोभा बढ़ाती रहीं।

चित्र संख्या 5 और 6 अयोध्या स्थित राज सदन के सामने शिव मंदिर के रिलीफ आकृतियां स्पष्ट रूप से बनारस के अमेठी मंदिर से तुलनात्मक रूप से विशेषताएं साझा करती है।

भौतिकता और तकनीक

पुरानी मंदिरों की दीवारों पर दिव्य महिला आकृतियों, परिचायिकाओं और उड़ने वाली पंखदार अप्सराओं को स्थानीय परिवेश के साथ जटिल अलंकरणों से उपचारित किया गया है, जो अयोध्या की इंडो इस्लामिक दृश्य संस्कृति के परिवेश को दर्शाती हैं।

चित्र संख्या 7 8 और 9 में रिलीफ मानव कृतियों को दर्शाया गया है, जिनमें से चित्र संख्या 7 अमेठी मंदिर बनारस का है तथा उसके बगल की दोनों आकृतियां राज सदन के सामने शिव मंदिर की है, जिस पर स्पष्ट रूप से बनारस के मंदिर का प्रभाव है।

नवाबी शासन के दौरान इन मंदिरों में ये सजावटी आंकड़े अयोध्या भर में एक पर क्षेत्रीय सजावटी पुनरावृति को दर्शाते हैं। अयोध्या के मंदिर के वास्तुकला के उभारदार तत्व स्थानीय परंपरा के साथ–साथ नव–शास्त्रीय रूपों से भी परिचित हैं। ये उभारदार रिलीफ अलंकरण नवाबी वास्तुकला परंपराओं का अयोध्या की वास्तुकला से जुड़ाव और बहुस्तरीय स्थल के रूप में स्थानीय, वैश्विक, दिव्य और शाही ऐतिहासिकता को प्रकट करते हैं। अयोध्या में एक सामग्री के रूप में चूने के प्लास्टरों और गारों का उपयोग मुगल और नवाब काल से क्रमागत रूप से चला आ रहा है तथा 18वीं–19वीं शताब्दी में मंदिरों की सजावट के उपयोग तक विकसित हुआ।

अयोध्या में मुगल और नवाबी राजवंश के शासनकाल में रिलीफ भित्ति चित्रों के रूप में वास्तुकला की एक अत्यधिक विकसित शैली को विकसित किया गया। पत्थरों की अनुपलब्धता गारे और मिट्टी के मंदिरों का निर्माण के लिए उत्तरदाई थीं, अच्छी जलोढ़ मिट्टी की उपलब्धता, अयोध्या मंदिरों की भित्तियों को सजाने के लिए टेराकोटा पैनलों और चूने के प्लास्टर के रिलीफ चित्रण को अनुमति दी।

इन रिलीफ चित्रों को बनाने के लिए आमतौर पर नवाब कालीन तकनीक को शामिल किया गया जिसके लिए चूने और रेत के प्लास्टर से दीवार की बेस को तैयार किया जाता है तथा उसमें अक्सर गुड़ और गोंद जैसे कार्बनिक योजकों को भी सम्मिलित किया जाता है। इसके बाद इनकी मोटी परत को दीवार पर लगाया जाता है तथा उसे हल्का नम रहने पर ही उत्कीर्ण किया जाता है। इसके अलावा प्लास्टर सूखने पर उभारदार तरीके से भी इसे निर्मित किया जाता है। कभी–कभी सांचों का उपयोग करके उभारदार उथली छवियों को निर्मित किया जाता है। अयोध्या में निर्मित मंदिरों की राहत भित्ति चित्रकला मौसम की मार के कारण क्षत विक्षत अवस्था में विद्यमान दिखाई पड़ती है, जिस पर टूट फूट और आंशिक क्षति के निशान प्रदर्शित हैं। औपचारिक संरक्षण पद्धतियों के अभाव के कारण यहां के मंदिरों का जीर्णोद्धार उन कमियों को कभी नहीं पूरा कर सकता, जिस तरह से वे अपने तत्कालीन समय में निर्मित की गई थीं।

निष्कर्ष

शहर के तेजी से सौंदर्यीकरण और औद्योगीकरण के कारण अयोध्या के राहत भित्ति चित्रों के संरक्षण में कमी आई जिसके कारण वे अपने पतन की ओर तेजी से अग्रसर हैं। इन रिलीफ भित्ति चित्रों के दस्तावेजीकरण की अत्यंत आवश्यकता है क्योंकि ये वास्तुशिल्पीय अलंकरणों से कहीं अधिक, भक्ति भावना, राजसी वैभव और कलात्मक परंपरा के गतिशील भंडार को प्रदर्शित करती हैं। के अलावा ये उभारदार उपचार अयोध्या की अनूठी दृश्य संस्कृति के पवित्र और सामाजिक सेतु के रूप में काम करते हैं, जिनको पहचानने, संरक्षित करने और स्मारकीय पुनर्निर्माण करके इसकी जीवंत विरासत को सम्मानित करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ–

1. Arteastic, T. (2018). Of the Earth – Bengal's Terracotta. Retrieved from arteastic: https://www.arteastic.in/blog/of-the-earth-bengals-terracotta/
2. Shrivastav, Y. (n.d.). Discovering the Architectural Grandeur of Bahu Begum Ka Maqbara, Ayodhya. Retrieved from experiencemyindia: https://experiencemyindia.com/architectural-of-bahu-begum-ka-maqbara-ayodhya/
3. Varshney, V. (2012). The architecture of Awadh. Retrieved from https://anotherglobaleater.wordpress.com/2015/08/20/the-architecture-of-awadh/
4. शिन, ह. (n.d.) बनारस में अमेठी मंदिरः एक तीर्थस्थल पर स्थापत्य कला का संगम। Retrieved from https://www.journal18.org/issue11/the-amethi-temple-in-banaras-architectural-encounters-at-a-pilgrimage-center/